IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11, Iss 08, 2022

समग्र शिक्षा दर्शन के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की प्रासंगिकता

डॉ0 नीलम सुमन
सहायक अध्यापक, उ0 प्र0 बेसिक शिक्षा विभाग
ईमेल– neelamsuman10@yahoo.com

डॉ0 संगीता चौहान
असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुसंधान पर्यवेक्षक), शिक्षा विभाग
बाबासाहब भीमराव अंबेडकर केंद्रीय विश्वविद्यालय लखनऊ।
ईमेल– sangita.27@rediffmail.com

शोध सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 तथा समग्र शिक्षा दर्शन, बाल–केंद्रित शिक्षा, शिक्षण विधि तथा विषय–चयन संबंधी अनेक शैक्षिक पक्षों में समान है। भारतीय शिक्षा में दोनों ही वस्तुनिष्ठता, सृजनात्मकता, तर्कशीलता, वैज्ञानिकता तथा रचनात्मकता के पक्षधर हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भी समग्र शिक्षा दर्शन की भांति बाल–केंद्रित शिक्षा की पूर्णतः समर्थक है जिसमें विद्यार्थी की शिक्षा का सर्वाधिक प्रधान एवं महत्वपूर्ण तत्व है। संपूर्ण शिक्षा प्रणाली जिसके लिए है और जिसके चारों ओर सदैव उसकी सहायता हेतु उपस्थित रहती है। समग्र शिक्षा दर्शन भी इस नीति की भांति शिक्षक को एक आदेशकर्ता, ज्ञानदाता एवं दंडदाता न बना करके उसे विद्यार्थी का पथप्रदर्शक, उसकी विभिन्न शैक्षिक समस्याओं को सुलझाने के लिए मार्ग बताने वाला मार्गदर्शक व एक सहयोगकर्ता के रूप में स्थापित करता है।

समग्र शिक्षा दर्शन विद्यार्थियों के 'मानस' को विकसित करने का प्रयास है और राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 इंद्रियों के माध्यम से विद्यार्थी की क्रियाशीलता एवं सृजनात्मकता के विकास के पक्ष में है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 विषय–चयन हेतु विद्यार्थी को स्वतंत्रता प्रदान करती है, समग्र शिक्षा दर्शन यह विश्वास करता है कि सभी विषयों की सतही शिक्षा देने से अच्छा है कि विद्यार्थी को चयनित विषयों का गहन अध्ययन कराया जाए। केंद्र सरकार द्वारा समग्र शिक्षा अभियान 2.0 को राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के साथ जोड़कर प्राथमिक शिक्षा से लेकर इंटरमीडिएट तक की शिक्षा में लागू किया गया है। जिससे इनसे संबंधित विद्यालयों को सभी आवश्यक शैक्षिक संसाधनों का लाभ दिया जा रहा है। अतः समग्र शिक्षा दर्शन इस नीति को सार्थक बनाने के प्रयास में एक प्रभावी उपकरण के रूप में भी देखा जा सकता है।

प्रस्तावना

कोलकाता में सन् 1872 ई0 में एक सुशिक्षित परिवार में जन्म लेने वाले श्री अरविंद घोष ने 14 वर्ष की आयु में इंग्लैंड की संस्कृति एवं रचनाकारों को जानने के लिए फ्रेंच, जर्मन, ग्रीक एवं लैटिन भाषा का अध्ययन किया। एक आदर्शवादी होने के साथ वे एक दूरदर्शी शिक्षाशास्त्री थे, जिनका मानवीय विकास में ही पूर्ण विश्वास रहा। श्री अरविंद यह मानते हैं कि जब मनुष्य ईश्वर में पूर्णता लीन हो जाता है तब उसकी समग्र जीवन दृष्टि विकसित होती है ईश्वर में लीन हो जाने वाले मनुष्य मानव से अतिमानव (Superman)

तथा उसका मन साधारण 'मानस' से 'अतिमानस' बन जाता है। वह यह भी मानते थे जो व्यक्ति शारीरिक मानसिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से एकीकृत हो जाता है उसमें दैवीय शक्तियां उत्पन्न हो जाती हैं। इसके लिए उन्होंने योग को समुचित माध्यम बताया। मस्तिष्क के चार विचार स्तर चित्त, मानस, बुद्धि तथा अंर्त्ज्ञान को मनुष्य के विकास का आधार मानने वाली समग्र जीवन दृष्टि (Integral view of Life) के माध्यम से इनके अनुसार उद्धत सत्य ज्ञान (Realization of the Sublime Truth) को प्राप्त किया जा सकता है। परंतु उस समय की शिक्षा में आध्यात्मिक शैक्षिक दृष्टि का अभाव था जिससे श्री अरविंद शिक्षा व्यवस्था से असंतुष्ट थे क्योंकि वह सूचनाओं पर आधारित थी। उनके अनुसार 'सूचनात्मक ज्ञान कुशाग्र बुद्धि का आधार नहीं हो सकता'। वे शिक्षा में अध्यात्मिकता, बुद्धिमता तथा सृजनात्मकता के अभाव का आभास करते थें। उन्होंने शिक्षा को आत्मीय विकास का साधन कहा।

महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों से समानता रखते हुए उनके शैक्षिक विचार बाल–केंद्रित शिक्षा को महत्वपूर्ण मानते हैं। वह विश्वास करते थे कि विभिन्न विषयों का सूक्ष्म ज्ञान कराने से अच्छा है कि विद्यार्थियों को चयनित विषय का गहन ज्ञान उपलब्ध कराया जाए जिससे मनुष्य सभी विषयों को सतही तौर पर जाने वाला सामान्य जगत का आम मनुष्य न बनकर कुछ विशिष्ट विषय का महाज्ञाता बने और जगत को रास्ता दिखाए। इतिहास को सभ्यता तथा संस्कृति का मूल स्रोत मानते हुए उनका यह कहना था कि प्रत्येक नागरिक को अपने देश के साहित्य व इतिहास का ज्ञान होना आवश्यक है जिससे वह जहां पर था उससे आगे बढ़ सके। सभी व्यक्तियों में जिज्ञासा, खोज, विश्लेषण व संश्लेषण करने की क्षमता विद्यमान होती है। वह विज्ञान तथा वस्तुनिष्ठता को शिक्षा हेतु महत्वपूर्ण मानते थे। समग्र शिक्षा के जन्मदाता का आज की राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में भी विशिष्ट योगदान है।

उद्देश्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में समग्र शिक्षा दर्शन की प्रतिभागिता का अध्ययन करना।

अनुसंधान प्रश्न

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में समग्र शिक्षा दर्शन का क्या प्रभाव है?

संबंधित साहित्य का विश्लेषण

रंजीत सिंह(1998) ने 'राजा राममोहन राय एवं राजा राममोहन राय एवं श्री अरविंद घोष के शैक्षिक दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन एवं वर्तमान शिक्षा में उसकी उपयोगिता' नामक अध्ययन में पाया की–

1. शिक्षार्थी को कुछ भी अलग से सिखा नहीं सकतें है।

IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11, Iss 08, 2022

2. प्रत्येक विद्यार्थी स्वयं एक अन्वेषक व विचारकर्ता होता है।
3. प्रत्येक विद्यार्थी साहसी तथा वीरता युक्त कार्यों को करने के लिए लालायित रहता है उसकी इस अभिलाषा तथा रुचि की रक्षा, शिक्षा–पद्धति के माध्यम से अवश्य ही होनी चाहिए।
4. विद्यार्थी को अपने शारीरिक तथा मानसिक विकास हेतु जागरूक होना चाहिए इसके लिए योग आवश्यक है। शिक्षक ज्ञान देयक न होकर मार्गदर्शक होता है जो एक आदर्श मनुष्य के रूप में विद्यार्थी के मस्तिष्क पटल पर मुद्रित हो जाता है। विद्यालय साधना केंद्र एवं संस्कृति के संरक्षक हैं।

प्रेम कुमारी मिश्रा (2009) 'पांडिचेरी के विशेष संदर्भ में महर्षि अरविंद घोष के शैक्षिक योगदान का अध्ययन' में पाया कि पांडिचेरी में महर्षि अरविंद द्वारा वैदिक शिक्षा केंद्र स्थापित किया गया जिसमें वेद व गीता आदि धार्मिक ग्रंथों की शिक्षा दी जाती थी। जो भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं साहित्य का संरक्षक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020: एक विकासात्मक एवं सुधारात्मक शिक्षा प्रणाली

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भारतीय शिक्षा में अब तक की उपस्थिति कमियों को समाप्त करने का प्रयास है। जिसमें 5+3+3+4 शिक्षा पैटर्न के अनुसार विद्यार्थी को 3 वर्ष की आयु से विद्यालय में नामांकित किया जाता है एवं 18 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर वह इंटरमीडिएट परीक्षा पास कर स्नातक में प्रवेश लेने योग्य हो जाता है। वह हाईस्कूल, इंटरमीडिएट, स्नातक व परास्नातक में कभी भी किसी भी डिग्री को करने के बाद अपनी रूचि के अनुसार विज्ञान अथवा कला विषयों का चयन कर सकता है। यह आवश्यक नहीं है कि विज्ञान स्ट्रीम का विद्यार्थी अपने आगे की शिक्षा भी विज्ञान स्ट्रीम में ही पूर्ण करें अथवा कला विषय का विद्यार्थी अपने आगे की शिक्षा कला विषयों को अध्ययन करके ग्रहण करें। विद्यार्थी अपनी रूचि के अनुसार एवं क्षमता को देखते हुए कोई भी विषय अध्ययन करने के लिए चयनित कर सकता है। इसके लिए वह पूर्णतः स्वतंत्र माना गया है क्योंकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का आधार ही बालक की रूचि व उसकी अपनी क्षमता के अनुसार उसको शिक्षा प्रदान करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अंतर्गत विद्यार्थी यदि बीच में पढ़ाई छोड़ देता है तो वह उसी वर्ष की कक्षा की पढ़ाई कभी भी कर सकता है अर्थात बीच में किसी भी किसी कारण से पढ़ाई छोड़ देने वाले विद्यार्थी कभी भी उत्तीर्ण कक्षा के आगे की अपनी पढ़ाई पुनः जारी कर सकते हैं। यदि कोई विद्यार्थी इंटरमीडिएट में कक्षा–11 उत्तीर्ण करने के बाद कक्षा–12 में नामांकित होने से पूर्व अथवा कक्षा–12 में अध्ययनरत होते हुए किसी वजह से बीच में ही पढ़ाई छोड़ देता है तो वह इस नीति के अंतर्गत कभी भी कक्षा–12 में पुनः अपना नामांकन करा कर आगे की शिक्षा ग्रहण कर सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11, Iss 08, 2022

में मल्टीप्लएंट्री एंड एग्जिट प्रावधान भी किया गया है इसके अंतर्गत कोई विद्यार्थी एक साथ कुछ निर्धारित डिग्रियां कर सकता है।

समग्र शिक्षा दर्शन की राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में प्रतिभागिता

1. यह नीति सृजनात्मकता व बुद्धिमता के विकास को शिक्षा के माध्यम से संभव बनाने का प्रयास करती है इसी प्रकार समग्र शिक्षा दर्शन पुनर्जागरण हेतु आत्मज्ञान, अध्यात्मिकता एवं सृजनशीलता को प्रोत्साहित करता है।

2. यह नीति प्रारंभिक शिक्षा के विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा में प्रदान किए जाने के पक्ष में है एवं समग्र शिक्षा दर्शन भी विद्यार्थियों की शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना आवश्यक बताता है।

3. यह नीति बाल–केंद्रित शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करती है एवं सभी प्रकार की आवश्यक शैक्षिक क्रियाओं का आधार व केंद्र बालक को ही मानती है। इसमें शिक्षा जगत में बालक सबसे प्रधान होता है। समग्र शिक्षा दर्शन भी बालक को केंद्र में रखता है और शिक्षा उसके चारों तरफ उसका विकास करने के लिए उसके अनुसार कार्य करती है।

4. इस नीति में अध्यापक एक आदेशकर्ता, दंडकर्ता और ज्ञान देने वाला व्यक्ति न होकर एक सुझावकर्ता, पथप्रदर्शक व विद्यार्थियों की समस्याओं का उनको समाधान बताने वाला सहायक होता है। समग्र शिक्षा दर्शन अध्यापक को शिक्षा का केंद्र न मानकर उसे विद्यार्थी का एक परामर्शदाता और मार्गदर्शक स्वीकार करता है।

5. इस नीति में विद्यार्थी को उसके मनोविज्ञान के अनुसार उसकी तर्कशीलता एवं सृजनात्मकता को विकसित करने के अवसर देने का प्रयास किया गया है। समग्र शिक्षा दर्शन मनोविज्ञान के आधार पर विद्यार्थी की बुद्धि का विकास करके उसकी वस्तुनिष्ठता तथा तर्कशीलता को बढ़ने के अवसर देता है।

6. यह नीति ज्ञानेंद्रियों के उत्तम उपयोग से विद्यार्थी के मन एवं मस्तिष्क का स्तर बढ़ाकर उसकी अवलोकन क्षमता, अवधान, संश्लेषण तथा विश्लेषण क्षमता को बढ़ाने के समर्थन में है। समग्र शिक्षा दर्शन भी मूल रूप से यह विश्वास करता है की उत्तम शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी का मन और मस्तिष्क एक साधारण मानस से 'अतिमानस' बन जाता है और इसी के साथ वह एक साधारण विद्यार्थी भी योग साधना के माध्यम से एक साधारण मानव से 'अतिमानव' (Superman) बन सकता है।

7. यह नीति विद्यार्थियों को उनकी रूचि एवं अधिगम क्षमता के अनुसार उचित विषय चयन करने का पूर्ण अवसर देती है। हाईस्कूल, इंटरमीडिएट, स्नातक और परास्नातक को स्ट्रीमलेस करने के अंतर्गत कोई भी विद्यार्थी चाहे वह विज्ञान का विषय चुनकर बाद में कला के विषय का अध्ययन कर सकता है

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11, Iss 08, 2022

तथा कला के विषय अध्ययन उपरांत वह विज्ञान के विषय का चयन भी अपनी रूचि के अनुसार स्वतंत्रतापूर्वक कर सकता है। समग्र शिक्षा दर्शन भी समस्त विषयों का अल्प ज्ञान विद्यार्थी को देने के स्थान पर कुछ चयनित विद्यार्थियों विषयों का गहन अध्ययन विद्यार्थी को कराना अधिक श्रेयस्कर समझता है जिसमें उसकी रूचि एवं उसकी क्षमता हो, जिससे वह सभी विषयों का सामान्य जानकार न बनकर कुछ विषयों का महाज्ञाता बन सके ।

समग्र शिक्षा अभियान 2.0 के साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में अंतर्निहित विभिन्न शैक्षिक अवधारणाएं समग्र शिक्षा से ली गई है। इस नीति को जमीनी स्तर पर सार्थक बनाने हेतु समग्र शिक्षा की उपादेयता को ध्यान में रखते हुए केंद्र सरकार ने 4 अगस्त 2021 को राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अंतर्गत 'समग्र शिक्षा अभियान 2.0' को प्रारंभ किया, जो प्राथमिक शिक्षा से लेकर इंटरमीडिएट तक की स्कूली शिक्षा हेतु शिक्षा गुणवत्ता में सुधार के प्रयास करने हेतु लागू किया गया है। इसके माध्यम से देश के लगभग 15.6 करोड़ बच्चे, 11.6 लाख स्कूल तथा 57 लाख शिक्षकों को लाभ प्रदान किए जाने का लक्ष्य है। इसके अंतर्गत स्कूल–ड्रेस, परिवहन भत्ता, पाठ्यपुस्तकों का लाभ और डीबीटी की सुविधा दी जाएगी। इस अभियान में केंद्र तथा राज्य सरकार द्वारा क्रमशः 60:40 के अनुपात में धनराशि की आर्थिक सहायता करना सुनिश्चित किया गया है। इस अभियान को सतत विकास लक्ष्य (SDG-4) तथा NEP–2020 के साथ जोड़कर 1 अप्रैल 2021 से 26 मार्च 2026 तक लागू किया गया है।

इस अभियान के अंतर्गत विद्यालयों में विद्यालय शिक्षा तथा व्यवसायिक शिक्षा को रचनावादी शिक्षा विधि (Constructivist Teaching Method) से प्रदान करने के लिए विद्यालयों में वर्चुअल कक्षा–कक्ष, डिटेल–चौनल, प्रशिक्षित शिक्षक, स्कूल परिवहन, स्कूल–ड्रेस, शिक्षक प्रशिक्षण सामग्री और खेल सामग्री की सुविधा दी जाएगी।

निष्कर्ष

भारतीय शिक्षा के इतिहास में शिक्षा को पूर्णतः बाल केंद्रित बनाने का सर्वोत्तम सराहनीय प्रयास राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 को माना जा रहा है । इस प्रकार हम देखते हैं कि समग्र शिक्षा दर्शन वर्तमान भारतीय शिक्षा के स्वरूप तथा गुणवत्ता में सुधार हेतु आज भी कार्य कर रहा है। इस नीति से जुड़कर यह इसे धरातलीय स्तर पर सफल बनाने के प्रयास में सहायक की भूमिका में सहयोगी है। भारतीय शिक्षा के वर्तमान ढांचे को राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुरूप बनाने के लिए समग्र शिक्षा दर्शन स्पष्ट रूप से प्रभावी सिद्ध हो रहा है जिससे इस नीति को लागू करने के पश्चात भारतीय शैक्षिक मनोदशा उसे ग्रहण करने के लिए संभावित रूप से अधिक से अधिक तत्पर हुई है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11, Iss 08, 2022

संदर्भ सूची

सिंह, रणजीत. (1998). 'राजा राम मोहन राय एवं श्री अरविन्द घोष के शैक्षिक दर्शन का तुलानात्मक अध्ययन एवं वर्तमान शिक्षा में उनकी उपयोगिता'. डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद. https://shodhganga.inflibnet.ac.in:8443/jspui/handle/10603/250139#

मिश्रा, प्रेम कुमारी. (2009), 'पांडिचेरी के विशेष संदर्भ में अहर्षि अरविंद के शैक्षिक योगदान का एक अध्ययन'. डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/285732

गुप्ता, अमिताभ. (2017). समग्र शिक्षा और आदिवासी समुदायः समस्याएं और समाधान. आदिवासी समीक्षा, 42(1), 112–128.

सिंह, विद्या नंदन. (2019). भारतीय शिक्षा प्रणाली में परिवर्तनः एक विश्लेषण. शिक्षा अनुसंधान और विकास, 37(2), 215–230.

शर्मा, अशोक. (2019). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: अभिभावकों के दृष्टिकोण से. शिक्षा और समाज, 68(1), 78–90.

इनसाइक्लोपीडिया, ब्रिटानिका (2020). श्री अरबिंदो (भारतीय दार्शनिक और योगी) https://www.britannica.com/biography/Sri-Aurobindo

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 एमएचआरडी फाइल्स, (2020). मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार. https://www.education.gov.in

समग्र शिक्षा, (2021). स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग (शिक्षा मंत्रालय) भारत सरकार. https://samagra.education.gov.in

भारतीय शिक्षा मंत्रालय. (2022). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: समग्र शिक्षा का पुनरीक्षण. उपलब्धः https%//www-education-gov-in/hi/nep&2020

....